[श्री घनश्याम सिंह]

भी जानते हैं कि आपने मूल्य भी पहले से अधिक दिये हैं लेकिन जिन परिस्थितियों में किसान को अपना गल्ला बेचना होता है क्या आपने उन परिस्थितियों पर भी विचार किया है कि उसे किस मजबूरी में अपना गल्ला बेचना पड़ता है । किसान को किस चीज से सबसे ज्यादा प्यार होता है ? किसान की सबसे प्यारी चीज होती है भूमि, किसान के लिये सबसे प्यारी चीज होती है उपज, उत्पादन निश्चित रूप से बढ़ा है लेकिन किसान के उपयोग में आने वाली वस्तुयें जैसे खाद, बीज, डीजल, विद्युत्, फर्टिलाइजर एवं मजदूरी को अगर देखा जाये तो उन सब की कीमतें बहुत अधिक बढ़ गई हैं । मान्यवर मैं कहना चाहता हूं कि उनको लाभकारी मूल्य देने के सिलसिले में उतने प्रयास नहीं हुए हैं जितनी कि आवश्यकता है । मैं इन शब्दों के साथ सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि उचित मूल्य के बारे में जरूर यहां पर विचार कर लें साथ ही मैं सरकार को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि 1977–80 के बीच में किसानों के मसीहा कहे जाने वाले लोगों ने गन्ने का मूल्य क्या दिया था यह आप भी जानते हैं और हम भी जानते हैं । उन दिनों किसानों को गन्ने को जलाना पड़ गया था लेकिन हमारी सरकार ने गन्ने का उचित मूल्य दे कर जो काम किया है उसकी जितनी सराहना की जाए वह थोड़ी है । अन्त में राष्ट्रपति जी ने अपना अभिभाषण हिन्दी में दिया इसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं । जब तक हम राष्ट्र भाषा का सम्मान नहीं करेंगे इसे नहीं अपनाएंगे देश की तरक्की नहीं हो सकती । इन शब्दों के साथ मैं श्री बी० पी० मौर्य द्वारा रखे गये धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

REPORT OF THE PUBLIC ACCOUNTS—COMMITTEE

DR. SANKATA PRASAD (Uttar Pradesh): Sir, I beg to lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Hundred and Twenty-third Report of the Public Accounts Committee on action taken by Government on the recommendations contained in the 66th Report (Seventh Lok Sabha) on Redundancy in materials procured for the manufacture of an aircraft.

MOTION OP THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—contd.

SHRI **A.** G. KULKARNI (Maharashtra): Sir, I am grateful to you for having given me the time to participate in the discussion on tha Motion of Thanks on the President's Address which was so ably moved by my honourable colleague, Shri Maurya and seconded by Shrimati Alva.

Sir, I am limiting myself to a few points, particularly those which were mentioned by the Leader of the House yesterday. He gave his views on the problem of corruption, the second is that of Assam and the third is that of the political atmosphere in the country. But, before that Sir, I would like to mention that the President wag kind enough to go through the various aspects of the economy like food production the industrial infrastructure, etc. As regards food production, Sir, I am very sorry to say that the President has glossed over the failure on the food front. This country, which was having a commendable growth as regards food production, has slid back. Maybe it is due to drought. But it is not exactly the drought that is responsible for this, but it is the imput prices. The increase in prices has pushed down the fertilizer consumption to a very low level. Sir, you are aware of the fact that urea, which was being sold at two rupees a kg in 1971, is now being sold at **5.17** in 1983. It i6